कल्पनाशील खेलों के ज़रिए भाषा विकास

वैष्णवी वी

जब उसे अपने एक साल के छोटे भाई की देखभाल नहीं करनी होती थी, या कपड़े नहीं धोने होते या बर्तन नहीं माँजने होते थे तब पाँच साल की मोना अक्सर घर के बाहर खेलती हुई दिखती थी। मोना द्वारा की जाने वाली क्रियाओं को आप आसानी से किसी-न-किसी तरह के खेल के रूप में देख सकते हैं, चाहे वो ख़ुद के साथ कर रही हो या दूसरे जोड़ीदारों के साथ। उस मोना को जो मुझसे किसी भी तरीक़े की बातचीत से सकुचाती थी, मैंने धारा-प्रवाह शब्दों में रस्सी-कूद के खेल के दौरान अपने साथियों से अपनी बारी के लिए बहस करते और झगड़ते देखा।

मोना अपनी कल्पना की दुनियाएँ बुनती और ख़ुद एक से दूसरी चीज़ के बीच रूपान्तरित होती रहती, हालाँकि इनमें भी वह अपनी ख़ुद की शख़्सियत को काफ़ी हद तक बनाए रखती — एक विशालकाय बूढ़े पेड़ से एक गुस्सैल फल वाला तो कभी नदी में बैठी एक आलसी डूबी (भील भाषा में भैंस) व और भी कई चीज़ें। वह बेहिचक कई पशु-पक्षियों की आवाज़ें निकाल लेती। जिस तरह उसे अपनी क्लास में बैठना और व्यवहार करना होता या बड़े लोगों और शिक्षकों की निगरानी में बन के रहना होता, वह रूप उसके खेल में दिखते रूप से एकदम उलट था। खेल के दौरान उसका शरीर जिस भी तरह से वह चाहती उस तरह से तैरता हुआ लगता, मुक्त और तरल। उसके खेलों में *उसकी मौजूदगी* को महसूस किया जा सकता था।

सीखना बच्चों के लिए आज़ाद कर देने वाली प्रक्रिया होनी चाहिए, इस तरीक़े से कि हर चीज़ के लिए जगह दी जाए, उलझन से लेकर स्पष्टता तक और बीच की सभी चीज़ों के लिए भी। इस पर बहस हो सकती है कि इस तरह की सीखने की प्रक्रिया में मदद के लिए खेल से बेहतर माध्यम कुछ और है या नहीं। गतिविधियों पर आधारित सीखना (*ऐक्टिविटी-बेस्ड लर्निंग*), खेल-खेल में सीखना (*प्लेफ़ुल लर्निंग*) कुछेक ऐसे *ट्रेंडिंग* शब्द हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में अक्सर सुनने को मिलते हैं और सभी ख़ासतौर पर खेल को शिक्षण-शास्त्र के केन्द्र में रखने की ज़रूरत पर बात करते हैं।

यह विचार हमारे सामने अक्सर आता है कि बच्चे अपनी दुनिया की समझ खेल के ज़रिए बनाते हैं, और यह उनकी कई सारी छुपी हुई क्षमताओं को ऊपर लाने में मदद करता है। उन अनेक कौशलों में से जो बच्चे सहजता से खेल के ज़रिए सीखते हैं। मैं, अपने विचार इस पर साझा करना चाहूँगी कि छोटे बच्चों में भाषा विकास का क्षेत्र किस तरह स्वाँग करने के खेल यानी कल्पनाशील नाटक खेल (*इमैजिनेटिव प्रिटेंड प्ले*) से जुड़ा हुआ है। जब 2020 में लॉकडाउन के बाद मध्य प्रदेश सरकार ने स्कूलों को बन्द रखते हुए गाँव/समुदाय के स्तर पर पढ़ाई फिर से शुरू करने के मक़सद से एक प्रोग्राम की शुरुआत की, तब मुझे समुदाय-आधारित कार्य के दौरान छोटे बच्चों से मेलजोल के ज़रिए इस विषय में अपनी सीमित समझ को विकसित करने के मौक़े मिले। आमतौर पर ये काम शहबासपुरा गाँव (जहाँ अधिकांश आबादी भील जनजाति की है) में छोटे समूहों में ऐसी कॉमन जगह पर किए गए जहाँ बच्चे आसानी से पहुँच पाते थे।

हम यह जानते हैं कि बच्चों द्वारा निर्मित स्वाँग-खेलों (*'प्रिटेन्ड प्ले'*)[1] की अपने आप में ही अहमियत होती है। ज़ाँ प्याज़े (Jean Piaget) और लेव वाइगोत्सकी (Lev Vygotsky) जैसे कई मनोवैज्ञानिकों और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से जुड़े शोधकर्ताओं ने भी बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में इन खेलों के योगदान पर लम्बी चर्चाएँ की हैं। मैं यह पता लगाना चाहती थी कि कल्पनाशील खेल को जब वयस्क सहजकर्ता के साथ एक निर्देशित माहौल में बढ़ाया जाए तो वह बच्चों में भाषा दक्षताओं के विकास में किस तरह सहयोग देता है। इस लेख में मैं छोटे बच्चों के कल्पनाशील खेलों के दौरान हुए अपने अवलोकनों से बनी समझ की चर्चा कर रही हूँ।

मोना की ख़ुद की रची (*मेक-बिलीव*) दुनिया

मोना के बारे में मेरी सबसे पसन्दीदा याद उस दिन की है जब मैंने उसे अपने आप में खेलते हुए और चिड़िया 'बनते' देखा था। अपनी बाँहों को फैलाए वह स्वाँग कर रही थी मानो आकाश में गोते खा रही हो। तभी अचानक वह एक बन्द मुट्ठी को अपने माथे तक लाई जैसे आसमान में कोई चीज़ उड़ते हुए आई और उसे लग गई हो। हमारी नन्ही चिड़िया धराशायी हो गई। वह ज़मीन पर यथासम्भव अचल हुई पड़ी रही और सबकी हँसी के लिए उसने अपने नाटक में अपनी जीभ भी थोड़ी बाहर निकाल ली। वह एक चिड़िया जैसी पैनी आवाज़ में रोती और चिल्लाती रही। अब तक मैंने अन्दाज़ा लगा लिया था कि उसकी कहानी में आगे क्या होगा- एक

नेक-दिल जीव आकर हमारी चिड़िया को उसकी तकलीफ़ से बाहर निकालेगा। लेकिन आगे जो हुआ उसने मुझे चौंका दिया। दूसरे बच्चे मोना के खेल में जुड़ने लगे, चिड़िया, जो कि असल में मोना थी, उसे उठाया और जश्न में जय-जयकार करते हुए उठाकर घूमने लगे। मोना का बड़ा भाई, बादल, चिड़िया के पंख निकालने का नाटक करने लगा और बाक़ी बच्चों ने चिड़िया को चारपाई पर रख दिया और यह एलान किया कि वे उसे दोपहर के खाने के लिए पकाएँगे। मोना से उसकी हँसी और नहीं रोकी गई और वह ठट्ठा मार कर हँसने लगी जिससे उनका नाटक ख़त्म हो गया। इसके काफ़ी देर बाद ही उसने और गाँव के दूसरे बच्चों ने मुझे बताया कि कैसे लड़कों द्वारा इस तरह पक्षियों और खरगोशों को गुलेल से उनके मांस के लिए मार गिराना भील समुदाय में एक आम चलन है — उनकी संस्कृति का एक चलन जो इस तीर चलाने वाली जनजाति में अब भी क़ायम है। यह घटना हमें बताती है कि कैसे छोटे बच्चे, अपने अनोखे तरीक़ों से, अपने शरीर और आवाज़ का इस्तेमाल कर, अपने रोज़मर्रा के जीवन से ली कहानियों को किसी-न-किसी रूप में हमेशा दोहराते रहते हैं।

साफतौर पर कहा जा सकता है कि जो कहानी उन्होंने मिल कर बुनी थी वह बहुत सांस्कृतिक अहमियत रखती थी। साथ ही, वह केवल उनके यथार्थ की एक नक़ल नहीं थी पर उसकी एक व्याख्या थी; वे जो ज़िन्दगी जीते थे, उसकी एक छोटी-सी फाँक उन्होंने पेश की थी जिस पर उनकी कल्पना का तड़का लगाया गया था।

मोना और उसके दोस्तों को अपनी ही काल्पनिक दुनिया बनाते और उसमें जीते हुए देख मुझे यह समझ आया कि किस तरह खेल के दौरान बना भावनात्मक सम्बन्ध और कल्पनात्मक जुड़ाव बच्चों के लिए मुक्त और बेहिचक बातचीत के मौक़े खोल देता है। इस ख़्याल ने भाषा शिक्षण को चिन्तामुक्त और मज़ेदार बनाने में इस तरह के खेलों का उपयोग करने के लिए मुझे हौसला दिया।

निर्देशित हस्तक्षेप

इसके बाद एक निर्देशित हस्तक्षेप तैयार किया गया जिसका उद्देश्य कल्पनाशील/नाटकीय खेल के ज़रिए अर्थपूर्ण भाषाई अनुभवों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी कराना था। मुख्यतौर पर यह प्रयास आँगनवाड़ी और पहली से तीसरी कक्षा में जाने वाले बच्चों के समूहों के साथ किया गया जिनकी स्कूल तक पहुँच या तो बहुत कम रही थी या नहीं रही थी।

हस्तक्षेप के पहले हिस्से में समूह को एक स्थिति के बारे में मोटेतौर पर बातचीत के ज़रिए बताया गया और उन्हें दी गई स्थिति में इच्छानुसार व्यवहार करने को कहा गया। यह निश्चित किया गया कि दी जाने वाली स्थिति बच्चों के लिए परिचित हो और उनके परिवेश से मिलती-जुलती हो। उदाहरण के तौर पर, एक बरसात का दिन, जंगल, बाज़ार, मेले में एक शाम आदि। यह देखने में मज़ेदार था कि जब बारिश के दिन की स्थिति दी गई तब हर बच्चे की उस पर अलग-अलग प्रतिक्रिया से एक ही स्थिति के अलग-अलग मायने निकल कर आए। कुछ ने भाग कर छत के नीचे पनाह लेने का नाटक किया, कुछ ने छातों के लिए छड़ियों का इस्तेमाल किया, कुछ ने हाथ इस तरह आगे बढ़ाए मानो बारिश को गले लगा रहे हों, और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने घर में भरे हुए पानी को बाहर निकालने का नाटक किया। कुछ बच्चे ख़ुद से खेल रहे थे जबकि कुछ दूसरों के साथ मिलकर। कुछ ने अपना नाटक चुपचाप किया जबकि दूसरों ने आवाज़ और संवादों को काम में लिया।

इस तरह खेल की क्रियाओं में 15 मिनट तक लगे रहने के बाद, हम हर किसी के नाटक पर बात करने के लिए इकट्ठे होते। यह उनके अन्दर आत्मचिन्तन का अभ्यास शुरू करने के लिए एक प्रयास था, चाहे फिर वह एक या दो वाक्य जितना ही क्यों न हो। एक सप्ताह के अन्दर धीरे से वे इस अभ्यास के लिए तैयार होने लगे, पहले से ज़्यादा बातें रखने लगे। ऐसे सवाल पूछ कर जिनके कई तरह के प्रत्युत्तर हो सकते थे (*ओपन एंडेड* सवाल), शब्दावली पर ज़ोर देकर और उनके किस्सों पर प्रोत्साहन और सराहना देकर उन्हें आगे बढ़ने का थोड़ा बहुत ढाँचा (या *स्कैफोल्डिंग*) देने से हमने देखा कि बच्चे अपने नाटक को दोबारा बताते हुए नीचे लिखे हुए तरीक़ों को काम में ला रहे थे, जो कि भाषा शिक्षण के क्षेत्र में काफ़ी प्रासंगिकता रखते हैं :

अर्थानुरणन (Onomatopoeia) का इस्तेमाल

जिस तरह से बच्चों ने अपने आसपास की चीज़ों के साथ सहजता से जोड़ी जाने वाली आवाज़ों, जैसे गरज, बारिश और पत्तों की सरसराहट के बारे में बात की, उसने इनके बारे में विस्तार से चर्चा करने के कई मौक़े खोल दिए। समूह में हमने चर्चा की कि किस तरह छत पर पड़ने वाली बारिश की आवाज़ 'साधारण' बारिश की आवाज़ से अलग लगती है या किस तरह एक क्रोधित कुत्ते की आवाज़, एक घायल कुत्ते की आवाज़ से अलग होती है।

ख़ुद को दूसरों की जगह पर रखना

इन घटनाओं पर नाटक करते हुए, वे मुख्यतौर पर दूसरे व्यक्ति, जीव या चीज़ की विशेषताओं को अपनाने की कोशिश कर रहे थे। जैसे कि, वह बच्चा जिसने बिजली की भूमिका निभाई, वह दूसरों का पीछा कर, उन पर *गिरने* की धमकी दे रहा था, जो कि बिजली का गिरना किस तरह होता है और किसी को कैसा महसूस करा सकता है, उसका एक कल्पनीय और मौलिक रूपक था।

अपने अभिनय को क्रम में सुनाना

बच्चे कभी-कभी अपने निजी अनुभवों को अपने अभिनय से जुड़ी कहानियों के रूप में रखते थे। बारिश के दिन की स्थिति के दौरान घर में भरे हुए पानी को निकालने का स्वाँग करने वाली लड़की ने उस पर बात करते समय अपने साथ हुई असली घटना का वर्णन किया जिस पर उसका अभिनय आधारित था।

ये अवलोकन यह सुझाते हैं कि इस तरीक़े के कल्पनाशील खेल कई तरह के साहित्यिक और भाषाई कौशल के विकास की नींव रख सकते हैं, जैसे कि कथा कहने की क्षमता, जटिल भाषा का इस्तेमाल (अतीत और भविष्य की बात करना)। साहित्यिक उपकरणों को समझना (एकालाप या मोनोलॉग, रूपक, उपमा), प्रतीकात्मक निरूपण और पारस्परिक संप्रेषण।

सारांश में

इस तरह के निर्देशित रूप के कल्पनाशील खेलों को बाद में दूसरी सामूहिक गतिविधियों में भी कराया गया, जहाँ एक समूह ने एक दृश्य का अभिनय किया और दूसरे समूह ने केवल उसे देख कर अपनी बनी हुई समझ और मायनों को सामने रखा। इसका इस्तेमाल उन्हें बच्चों की नई किताबों से परिचित कराने के लिए भी किया गया, क्योंकि कहानियाँ नाटकीय रूप में अनुभव करने से स्मृति में बेहतर तरीक़े से बैठ जाती हैं। बच्चों के जवाब, उनके क़िस्से, नई सीखी गई शब्दावली, सब चार्टों पर लिख कर और चित्रित कर के रखे गए ताकि उन्हें दोबारा देखा जा सके। क्योंकि इन चार्टों पर लिखी चीज़ें आसानी से पहचानी जा सकती थीं और निजी स्तर पर अर्थ लिए हुई थीं, बच्चे (कक्षा दूसरी और तीसरी वाले) इन्हें जल्दी से पढ़ या डीकोड कर पाते थे।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि हालाँकि बच्चों के पास दुनिया को देखने के अपने नज़रिए होना ज़रूरी है, यह भी उतना ही ज़रूरी है कि उनके पास उन नज़रियों को सामने रखने के लिए साधन और गुंजाइशें हों। इस सन्दर्भ में कल्पनाशील खेल इसको सुगम बनाने के लिए एक उपयुक्त साधन की तरह इस्तेमाल हो सकता है और साथ ही बड़ों को बच्चों को समझने के लिए एक माध्यम भी दे सकता है।

*पहचान की सुरक्षा के लिए नाम बदले गए हैं।

Endnotes

1. *प्रिटेंड प्ले*, जिसे कल्पनाशील खेल और प्रतीकात्मक खेल भी कहते हैं, प्रारम्भिक बाल्यावस्था में शुरू हो जाता है, जिसमें बच्चा ख़ुद के यथार्थ बनाता है और दूसरे लोगों, जानवरों और जगहों का अभिनय करता है। उनकी आसपास की चीज़ों को उनके कल्पना किए हुए यथार्थ को दर्शाने के लिए प्रतीकों के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

वैष्णवी वी ने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से एम ए शिक्षा की स्नात्तकोतर उपाधि प्राप्त की है। इन दिनों वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में रिसोर्स पर्सन (अँग्रेज़ी) के रूप में काम कर रही हैं। उनकी रुचि बच्चों का साहित्य पढ़ने में, भाषा शिक्षणशास्त्र में और समुदायों के साथ काम में है। उनसे vaishnavi.v@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सिमरन साध